ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292
RNI REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 264-266**

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

भारतीय स्त्री समाजः परिवेश व परिदृश्य

नरेन्द्र कुमार

शोध अध्येता, वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर (उ0प्र0) भारत

Received-07.013.2023, Revised-13.03.2023, Accepted-13.03.2023 E-mail: n.mahuwara@gmail.com

सारांशः *भारतीय स्त्री समाज का परिवेश व परिदृश्य समय के बदलते स्वरुप में काफी परिवर्तनशील रहा है, जिसकी वजह से महिलाओं की स्थिति सदैव एक समान सी नहीं रही है। इसमें समय के साथ परिवर्तन होते रहे है। उनकी स्थिति में वैदिक युग से लेकर आधुनिक काल तक अनेक उतार चढ़ाव आते रहे हैं तथा उनके स्वरूप में सामाजिक संरचना के प्रतिरूप बदलाव भी होते रहे हैं। वैदिक युग में स्त्रियों की स्थिति सुदृढ़ थी, परिवार तथा समाज में उन्हे सम्मान प्राप्त था। शिक्षा का अधिकार उनको प्राप्त था और शिक्षा, धर्म, व्यक्तित्व व सामाजिक विकास में उनका बराबरी का सहयोग था। उत्तर वैदिककाल से स्त्रियों की अवनति संस्थानिक रुप से प्रारम्भ हुई। उनके ऊपर विभिन्न प्रकार की निर्योग्यताओं का आक्षेप कर दिया गया। उनकी स्वतंत्रता व उन्मुक्तता पर अनेक प्रकार के अंकुश लगाये जाने लगे। "मध्यकाल में इनकी स्थिति और भी दयनीय हो गयी। सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, शैक्षणिक, व्यवसायिक एवं अन्य ऐसी विषमताओं के आधार पर स्त्री समाज पर काफी चुनौतियाँ है।"[1] इन निर्योग्यताओं के आधार पर स्त्री की कुशलता और दक्षता पर काफी प्रश्न किये जाते है जिसकी वजह से महिलायें न तो सार्वजनिक क्षेत्र में अपना योगदान कर सकती है और न ही शिक्षा को प्राप्त कर सकती है। भारत की प्राचीन संस्कृति की महानता को प्रबल करने वाले कई कारकों में से एक महिलाओं को दिया जाने वाला सम्मान जनक स्थान है। राजा राम मोहन राय ने इस असमानता और अधीनता के विरुद्ध एक आंदोलन शुरू किया जिसमें अंग्रेजों के साथ भारतीय संस्कृति के संपर्क से भी महिलाओं की स्थिति में सुधार आया। महिलाओं की स्थिति के पुनरुद्धार में तीसरा कारक महात्मा गांधी का प्रभाव था जिन्होंने महिलाओं को स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने हेतु प्रेरित किया।*

कुंजीभूत शब्द– वैदिक युग, आधुनिक काल, सामाजिक संरचना, शिक्षा, धर्म, व्यक्तित्व, सामाजिक विकास, कुशलता, दक्षता।

स्वतंत्रता की इस पुनरावृत्ति के परिणामस्वरूप, भारतीय महिलाओं ने स्वयं को विभिन्न कार्य क्षेत्रों में अपनी कार्यक्षमता के प्रस्तुत करने का कार्य किया है। वे राजनीति व प्रशासन में भी भाग ले रही हैं किन्तु महिलाओं की स्थिति में इस सुधार के बावजूद निरक्षरता, दहेज, अज्ञानता और आर्थिक गुलामी की बुराइयों को पूरी तरह से दूर करना होगा ताकि उन्हें भारतीय समाज में उनका सही स्थान मिल सके। "वर्तमान युग में स्त्री समाज एक प्रखर रुप में समाज के समक्ष उभरा है। पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था में भारतीय समाज में स्त्री का शोषण कोई नयी बात नहीं है। यह ऐतिहासिक परम्परा व सामाजिक रूढ़िवादिता के कारण है।"[2] पुरुष समाज में स्त्री को सभी प्रकार के सम्बन्धों का निर्वहन करते हुए जीवन व्यतीत करना पड़ता है। स्त्री ने जब भी स्वयं की भूमिका को समाज के बीच पुरुष से श्रेष्ठ सिद्ध किया है, पुरुष ने उसे देवत्व से जोड़कर उपास्य बना दिया है और स्त्री के स्वरूप में उसके अस्तित्व को ही नकार दिया है। भारतीय समाज में स्त्री ने स्वयं के जीवन में काफी संघर्ष के पश्चात भी अपने कर्तव्यों का पालन काफी श्रेष्ठता के साथ किया है। स्त्री की इस सार्वभौमिका और सार्वकालिक पीड़ा को समझने उसके वास्तविक कारणों को खोजने व उसके स्थायी निराकरण करने का प्रयास भारतीय समाज में स्त्री के परिदृश्य के रुप में करता है। स्त्री समाज के अस्तित्व व उसकी अस्मिता को बनाये रखना समाज के प्रत्येक वर्ग का कर्तव्य है। स्त्री की शारीरिक क्षमता मात्र इच्छाएं व अर्थ पर आधारित स्वावलंबिता ही उसकी स्वयं की स्थिति को परिवार के मध्य सक्षम बनाती है। इस प्रकार के प्रत्येक कार्य व स्त्री आधारित दायित्व जो भी स्त्री की स्वतंत्रता को समाज के बीच में संबोधित करते हैं किन्तु सभी अधिकार हमारे भारतीय समाज में पुरुषों ने अपने अधिकार क्षेत्र में रखे हुए हैं। "पुरुषों के संरक्षण में रहने वाली स्त्रियां समानरुप से कभी भी अपनी पहचान को संरक्षित नहीं कर पाती हैं और एक सीमित दायरे में रहते हुए अपने जीवन को व्यतीत कर देती हैं।"[3] उन्हें अपने जीवन में किसी भी तरह के परिवर्तन को लाना संभव नहीं होता है जो कहीं ना कहीं उनकी पहचान पर एक प्रश्न चिह्न बना रही हैं। भारतीय पुरुष प्रधान सोच सभी परिस्थितियों में अपने अधिकारों व स्त्री आध ारित अधिकारों पर अपने वर्चस्व का प्रभाव संरक्षित करती हैं। शरद सिंह ने अपने ज्यादातर साहित्य में नारी के जीवन की अतिसूक्ष्मता को विभिन्न विषयों के साथ विविधतापूर्वक समग्र लेखन के रुप में प्रसारित किया है जो कि हमें सोचने हेतु विवश करता हैं। वह अधिकतर समाज में उपस्थित उन बिन्दुओं पर सोचना व लिखना ज्यादा पसन्द करती हैं जो प्रायः अछूते रह जाते हैं या फिर यह कह सकते है कि सामाजिक रुप में उनकी बात नहीं के बराबर की जाती है। स्त्री जीवन का सूक्ष्म विश्लेषण इनके कथानकों की एक विशेषता है। इनकी कृतियों में उपस्थित स्त्री–विमर्श पूर्वाग्रहमुक्त और अन्वेषण के रूप में उभर कर सामने आता है, जो वैचारिक अर्थवत्ता के साथ ही साहित्यिक मानक पर भी खरा उतरता है। भारतीय परिवेश व परिदृ श्य में स्त्री समाज की संरचना काफी जटिलतापूर्क विस्तारित है जिसमें मानवीय मूल्यों का नैतिकता पर पड़ते प्रभाव ने उनकी

अनुरूपी लेखक/संयुक्त लेखक

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

वास्तविकता को विघटित कर दिया है। "आधुनिक समय में वैचारिक अंतर्द्वंद उसे पितृसत्तात्मक व्यवस्था में स्वयं को उच्चरित करते हैं जिसकी वजह से सुरुवाती विसंगतियां भी जीवन के समूल रूप को नष्ट करने का प्रयास करती हैं जिसमें स्त्रीवादी चिंतकों और सामाजिक संगठनों का विशेष योगदान रहा है।"[4]

पारम्परिक विषमताओं की कुरीतिक मानसिकताओं को संकल्पित करने का प्रयास करते हैं जोकि जीवन के संघर्ष से जुड़ी हुई भावना समाज से उठकर धीरे–धीरे सामाजिक पटल पर प्रभावी हो जाती है। आज की आधुनिक समाज की परिस्थितियों में किसी भी स्त्री के लिए अच्छी शिक्षा के बावजूद भी स्वयं को अपने अधिकारों के लिए लड़ने हेतु संदर्भित नहीं समझा जाता है और आए दिन उन्हें किसी ना किसी रूप में अपने लिए गतिरोध और संघर्ष का सामना करना पड़ता है, जो इस परिस्थिति में किसी भी औरत के लिए बड़ें ही कष्ट की बात होती है।

स्त्रियों को प्रत्येक मामले में शिक्षित होने और सफल होने के बावजूद भी अनेक कार्य स्थलों पर शोषण का शिकार होना पड़ता है। सामाजिक चुनौतियों व विसंगतियों का सामना करती स्त्री समाज को पितृसत्तात्मक व्यवस्था व सामाजिक कुरीतियों के चलते उन्हें स्वयं को सही साबित करने के लिए काफी समस्याओं का सामना भी करना पड़ता है। ऐसी परिस्थिति में एक सामान्य स्त्री के लिए ऐसी संभावनाएं ज्यादा होती है कि उसे स्वयं ऐसी व्यवस्थाओं को स्वीकार कर ले।

पुरुष प्रधान देश में ऐसे मोर्चे पर स्त्रियां स्वयं को पुरुषों से पीछे ही पाती हैं "अनेक लेखकों द्वारा रचित कहानियां जैसे छिपी हुई औरत और अन्य कहानियां ऐसी संभावनाएं हैं, जो कहीं ना कहीं ऐसे मामलों को उद्वेलित करती हैं जिससे यह पता चलता है कि कहानियों और पात्रों में भी स्त्रियों को स्वयं के अधिकारों के साथ हनन का द्योतक होना पड़ता है।"[5]

उक्त कहानियों में नायिका ने अपने दर्द को शब्दों के माध्यम से उपकृत किया वह कहती है वह मेरा शत्रु है शत्रु के रूप में वह मेरा शोषण करने वाला एक मानक है। उसके द्वारा मुझसे हर उस चीज का हनन किया गया है। जो कहीं ना कहीं मेरे अधिकारों का हरण करता है। ऐसी परिस्थिति में मुझे एक ऐसे बंधन से बांध दिया गया है, जिन बंधनों से किसी भी स्त्री के लिए स्वयं को अलग करना आसान नहीं होगा वैसे तो स्त्रियां स्वयं में कायर नहीं होती है किंतु बावजूद उसके भी वह ऐसी पारिवारिक बंधनों को तोड़कर स्वयं को अलग नहीं हो सकती, फिर चाहे उसे शारीरिक शोषण का सामना भी क्यों ना करना पड़ें अथवा स्वयं को कोसते हुए कहती है कि मैं एक कायर मानव के रूप में भी स्वयं को द्योतक मानती हूं ऐसी परिस्थिति मेरे लिए तो भाग्यं के अनुरूप होगी।

स्त्री समाज की परंपरागत रूढ़िवादिता वाली भावनाएं– प्राचीन सभ्यताओं व पुरातन रुढ़िवादिता की अवधारणायें स्त्री समाज के जीवन का मुख्य आधार रहा है जिसमें स्त्री समाज अपने को सीमित पाता है। यह रूढ़िवादिता एक ऐसे विचार के रूप में विकसित है, जो कहीं ना कहीं इनकी सभ्यताओं और संस्कृतियों से सम्बन्धित पुरुष प्रधानता वाली व्यवस्थाओं और स्त्रियों के शोषण जैसे मामलों से जुड़ी है। भारतीय समाज में स्त्री का स्थान सर्वोपरि रहा है, किन्तु सामाजिक विडम्बनाओं और विपरीत परिस्थितियों के चलते स्त्री समाज का शोषण होता रहा है। "सामाजिक विषमताओं एवं पुरातन मान्यताओं ने कहीं न कहीं स्त्री समाज को काफी हद तक प्रभावित करने का कार्य किया है, जिसकी सबसे बड़ी वजह रुढ़िवादिता और पितृसत्तात्मकता युक्त समाज रहा है।"[6]

किसी भी सामाजिक परिस्थिति के अनुसार, किसी भी धर्म में स्त्रियों को प्रमुखता से प्रदर्शित रूप में नहीं रखा गया है। धर्म ग्रंथों के आधार पर यदि देखा जाए तो पुरुषों द्वारा रचित तथाकथिक वक्तव्य जिसमें ज्यादातर धर्म प्रवर्तक में कोई ना कोई पुरुष ही प्रभावी रूप में रहा है। ऐसी परिस्थितियों में सामाजिक मान्यतों के आधार पर महिलाएं अपने प्रत्यक्ष रूप में देवी का रूप तो हो सकती हैं, किंतु पुरुष प्रधान देश में ईश्वर के समान स्थापना को ग्रहण नहीं कर सकती और सर्वोच्च स्थान को प्राप्त कर सकती हैं, जो कहीं ना कहीं पुरुष के वर्चस्व को चुनौती देता है। ऐसी परिस्थितियों में नारी को उसके उत्थान और अधिकार को दिलाने की आवश्यकता होगी। परिस्थितियां और समय बदलने के साथ जीवन की वास्तविक स्थिति में आमूलचूल परिवर्तन ही आया है किंतु पुरुष प्रधान देश वाली मानसिकता से स्वयं को अलग नहीं कर पाई है।

सामाजिक परंपराओं के नाम पर प्राचीन गौरव गाथाओं को प्रसारित कर उनको अति क्रूरतावादी रीति–रिवाजों बंधनों और अनैतिक दश्यों में बांध दिया गया है तॉकि वह इन बंधनों से स्वयं को मुक्त ना कर पाए। इसके बाद ही किसी पुरुष के लिए किसी स्त्री को पराधीन करना बड़ा ही आसान हो जाता है। यह सामाजिक विडम्बना कहीं ना कहीं स्त्रियों के अधिकार अभिलेख को कम करने हेतु ही बनाए गए हैं, जहाँ स्त्रियां परंपरागत रूप से रुढ़ितावादी रीति–रिवाजों को चाहने के लिए बातें होती हैं। इसके लिए कभी भी उनके स्वतंत्रता रूपी वर्चस्व को समाज के सामने रखने से भी पुरुष घबराता है। "ऐसी भावनाओं में कभी भी पुरुष को विषयों की स्थिति देखकर दया की भावना नहीं आती यही कारण है कि सामाजिक रूप से पुरुषों के समान स्त्रियों को ऐसी व्यवस्था उपलब्ध नहीं हो पाती हैं।"[7]

अतः ऐसी परिस्थिति में किसी भी नारी के लिए स्वयं के अनुरुप जीवन यापन करना एक स्वप्न की भाँति बनकर रह

ISSN NO.-2347-2944 (Print)
e-ISSN NO.-2582-2454 (Online)
Vol.-16, No.- I, Issues-27, YEAR- Jan.-March-2023

जाता है, क्योंकि उसके प्रतीक स्वप्न पर पुरुषवादी मानसिकता को लेकर लगातार शोषण का कार्य किया जाता रहता हैं कि किस तरह वह इन्हें इनके अधिकारों के साथ दबा कर रख सकें और घरेलू अर्थहीन व रुढ़िवादी परम्पराओं से बँधने के कारण स्वयं को कमजोर एवं उपेक्षित महसूस करते हुए स्त्री अपने जीवन को एक कैदी के रूप में जीती हुई नजर आती है, जिसके कारण उसके जीवन का लक्ष्य उसे कभी भी दिखाई नहीं दे पाता है। परिवर्तित सामाजिक संरचना के साथ स्त्रियों में अपनी परंपरागत रूढ़िवादी सोच पर लगी पाबंदियों को हटाने हेतु अपने स्तर से प्रयास किया, किंतु कहीं न कहीं बढ़ते नारी संघर्ष को एक स्त्री के द्वारा कम करने के माध्यम से हटाने हेतु सफल रही। लेखिका शरद सिंह जी ने अपने साहित्यिक रचना में स्त्री समाज के लिए प्रसारित रूढ़िवादी मनोवृत्ति को विस्तारित रुप में सृजनात्मकता के साथ अपने लेखन में दर्शाया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. अहूजा, राम (1999) भारतीय सामाजिक व्यवस्था, रावत प्रकाशन जयपुर, नई दिल्ली।
2. मिश्र, जयशंकर (2006) प्राचीन भारत का सामाजिक इतिहास, बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी, पटना।
3. व्यास, जय प्रकाश, नारी शोषण, ज्ञानदा प्रकाशन, 2003.
4. राजकुमार डॉ0, नारी के बदले आयाम, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, 2005.
5. यादव, डॉ0 उषा, हिन्दी की महिला उपन्यासकारों की मानवीय संवदेना, राधाकृष्ण प्रकाशन, नयी दिल्ली प्र.सं. 1999.
6. सिंह, शरद, स्त्री विमर्श का सही रास्ता दिखाता है मैत्रेयी का साहित्य हंस, नवंबर, 2010.
7. कस्तवार, रेखा, स्त्री चिन्तन की चुनौतियाँ, नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2006, पृष्ठ संख्या 25–26.

*****